प्रकाशनार्थ

पटना, 26 अगस्त। मिशन लाइफ अभियान के अन्तर्गत एशियन डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर (आद्री) - स्थित ईआईएसीपी केंद्र द्वारा एक प्रस्तुतिकरण का आयोजन किया गया। ईआईएसीपी आद्री की जलवायु संकट से लड़ने वाली इकाई है और यह केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन कार्य करती है।

प्रस्तुतिकरण में ईआईएसीपी के आईटी एवं जीआईएस अधिकारी श्री गुलशन पटेल ने दृढ़ता से सिफारिश की कि यदि पटना में उत्पन्न होने वाले विशाल मात्रा में हानिकारक ठोस कचरे को कम करके प्रबंधनीय बनाना है, तो नागरिकों को अपने व्यवहार में बदलाव लाना होगा। उन्होंने कहा कि हम सभी को शहर के रेस्तराओं से टेकअवे के लिए प्लास्टिक के उपयोग को कम करना चाहिए या पूरी तरह बंद कर देना चाहिए। साथ ही उन्होंने सभी से प्लास्टिक की प्लेटों का उपयोग न करने का आग्रह किया। उन्होंने इस तथ्य का हवाला दिया कि पटना प्रतिदिन लगभग 1,700 से 1,900 टन ठोस कचरा उत्पन्न कर रहा है। हालांकि, इसमें से केवल 25 प्रतिशत को ही साफ किया जा रहा है, जबकि कुल कचरे का 85 प्रतिशत यानी लगभग 1,200 टन प्रतिदिन लगातार-सिकुड़ते जा रहे लैंडफिल स्थलों पर डाला जा रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार को शहर के हर घर, दुकान, संस्थान आदि में स्रोत पर ही कचरे के पृथक्करण को बढ़ावा देना चाहिए। कबाड़ीवालों और कचरा बीनने वालों (रैग पिकर्स) के लिए योजनाएं बनाई जानी चाहिए। उन्होंने पूरा जोर देते हुए कहा कि पटना की खराब कचरा समस्या का दीर्घकालिक समाधान '**वेस्ट टू वेल्थ**' (कचरे से धन) पुनर्चक्रण मॉडल को अपनाना है। ऐसा कदम शहर की अर्थव्यवस्था को उस स्थिति में परिवर्तित करने में सक्षम बनाएगा जिसकी विशेषता '**कचरे से संसाधन एवं आय का सृजन**' होगी। इससे यह गंभीर और लगातार हानिकारक मुद्दा सुलझ सकेगा।

श्री पटेल के शोध-पत्र प्रस्तुतिकरण के अलावा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक श्री रेवती रमण, ईआईएसीपी- आद्री के **10-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम, हाइड्रोपोनिक्स इन फ्लावर्स एंड मेडिसिनल प्लांट्स** के पहले बैच के समापन सत्र में उपस्थित रहे। श्री रमण ने हाइड्रोपोनिक्स के क्षेत्र में व्यवसाय करने की संभावनाओं और हाइड्रोपोनिक्स से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। छात्रों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। उन्होंने इस बात पर अपने विचार साझा किए कि कैसे वे भविष्य में इस हाइड्रोपोनिक्स पाठ्यक्रम में सीखा ज्ञान का उपयोग करेंगे।

भूगोल के शोध छात्र श्री निशांत रंजन और पर्यावरण विश्लेषक श्री अमित कुमार पांडेय भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। ईआईएसीपी समन्वयक डॉ. सुनील कुमार गुप्ता और ईआईएसीपी की श्री मौसम बहार भी इस अवसर पर उपस्थित थे ।

इस हाइड्रोपोनिक्स पाठ्यक्रम का दूसरा बैच 10 दिनों तक चलेगा और 31 अगस्त से शुरू होगा।

(अभिषेक प्रसाद)